1 मार्च 2023 को राजभवन में आयोजित होने वाले "युवा संगम" के अवसर पर माननीय राज्यपाल का अभिभाषण

IIT GUWAHATI के कार्यवाहक निदेशक डॉ.परमेश्वर कृष्णन अय्यर जी,
हमारे देश के विभिन्न हिस्सों से आए मेरे प्यारे
छात्रों औरष
यहां मौजूद IIT GUWAHATI और राजभवन के अधिकारी और कर्मचारी गण,

सबसे पहले आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई और बहुत-बहुत शुभकामनाएं। आज यहां विशेष रूप से देश के विभिन्न प्रांतों से आए हमारे युवा साथियों से मिलकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। वास्तव में आप देश के भविष्य ही नहीं, बल्कि आने वाले दिनों में आप पर देश की जिम्मेदारियां भी हैं।

मित्रों,
आप सभी जानते हैं कि हमारे ऋषियों ने उपनिषदों में 'तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय' की प्रार्थना की है। यानी, हम अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। मृत्यु से, परेशानियों से अमृत की ओर बढ़ें। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता। इसलिए, अमृतकाल का ये समय हमारे ज्ञान, शोध और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी, और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक होगा। हमें अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपने संस्कारों को जीवंत रखना है, अपने स्वर्णिम अतीत को, अपनी विविधता को संरक्षित और संवर्धित करना है, और साथ ही, टेक्नोलॉजी, इनफ्रास्ट्रक्चर, एजुकेशन, हेल्थ की व्यवस्थाओं को निरंतर आधुनिक भी बनाना है।

देश के इन प्रयासों में IIT, IIM जैसे उच्च शैक्षिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों की बड़ी भूमिका है। मुझे विश्वास है कि हमारे विश्वविद्यालयों एवं उच्च शैक्षिक संस्थानों के प्रयासों से आने वाले दिनों में भारत का कद और भी ऊंचा होगा।

मित्रों,
मुझे बताया गया है कि युवा संगम कार्यक्रम के एक भाग के रूप में असम का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 120 विद्यार्थी प्रतिनिधियों को IIT Jammu, IIM Bangalore, NITTTR Chandigarh, IIT Gandhinagar और JNU Delhi भेजे गए। इससे "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की पहल को निश्चय ही बल मिलेगा।

मित्रों,
वर्तमान समय में जो युवा पीढ़ी है, जिनकी उम्र 18 से 35 वर्ष के बीच में है, उन्हें आज़ादी के संघर्ष और लोकतंत्र के महत्व को और बेहतर ढंग से जानना चाहिए। ऐसे में उसे अपने देश के इतिहास और वर्तमान से जोड़ना जरूरी है।

मित्रों,
हम सभी यह जानते हैं कि असम सहित पूरा "पूर्वोत्तर क्षेत्र" सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से शेष भारत से कुछ भिन्न है। यहाँ की जनजातियों में प्रचलित परंपराएँ, भाषा, प्राकृतिक सुंदरता - सदा सर्वदा से शेष भारतवासियों को आकर्षित करती रही है। पूर्वोत्तर के लोग सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न एवं सजग हैं। यही कारण है कि पूर्वोत्तरवासी अपनी संस्कृति एवं परंपराओं को अक्षुण्ण बनाए रखने में सक्षम हैं।

मित्रों,
हमारे और राष्ट्र के सपने अलग-अलग नहीं हैं, हमारी निजी और राष्ट्रीय सफलताएँ अलग-अलग नहीं हैं। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। हमसे ही राष्ट्र का अस्तित्व है, और राष्ट्र से ही हमारा अस्तित्व है। ये भाव, ये बोध नए भारत के निर्माण में हम भारतवासियों की सबसे बड़ी ताकत बन रहा है। अमृतकाल का ये समय, सोते हुए सपने देखने का नहीं बल्कि जागृत होकर अपने संकल्प पूरे करने का है। आने वाले 25 साल, परिश्रम, त्याग व समर्पण के 25 वर्ष हैं। सैकड़ों वर्षों की गुलामी में हमारे समाज ने जो गंवाया है, ये 25 वर्ष का कालखंड, उसे दोबारा प्राप्त करने का है। इसलिए आजादी के इस अमृत महोत्सव में हमारा ध्यान भविष्य पर ही केंद्रित होना चाहिए।

आप सभी को एक बार फिर से बहुत-बहुत बधाई।
धन्यवाद,
जय हिन्द !